निर्मल कुमार: संक्षिप्त परिचय

निर्मल कुमार एक बहुआयामी प्रतिभा है। उन्हे हिन्दी मे लिखना ही अच्छा लगता है। जब प्रेरणा होती है तो अंग्रेजी मे उपन्यास और दार्शनिक पुस्तके लिखते हैं। हिन्दी मे उनके नौ उपन्यास, दो काव्य संग्रह, चार कहानी संग्रह, पांच नाटक, एक इतिहास पर और दो दार्शनिक ग्रंथ कुल चौबीस किताबें छपी है।

अंग्रेजी मे लिखे उनके उपन्यास आई0 बी0 ए0 और रूपा ने छापे हैं। उनकी चार दार्शनिक पुस्तके भारतीय विद्या भवन ने छापी है। उनके सिक्ख दर्शन और धर्म पर दिये गये ग्यारवे गुरू नानक मेमोरियल लेक्चर्स स्टर्लिंग से छपे। इनका तीसरा संस्करण छप रहा है। सिक्ख विद्वानो ने लिखा है निर्मल कुमार का सिक्ख दर्शन मे प्रवेश एक स्थायी उपलब्धि है। ऐसा पहले किसी ने नही लिखा। अंग्रजी मे निर्मल कुमार की आठ किताबें छपी हैं।

निर्मल कुमार का लेखन सिद्ध करता है कि रस और ज्ञान, कोमल शब्द और कठोर दर्शन का संगम दुर्लभ नही है। इनका संगम कराना ही साहित्यकार का काम है। यह संगम कोई भी मनुष्य अपनी चेतना मे विकसित कर सकता है। ऐसे व्यक्ति को प्रकृति लिखने का अधिकार देती है। उसे प्रेरित करती है लिखने को। कभी उसके हाथ से कलम लेकर लिख देती है उसके नाम से। अन्य लोग स्वेच्छा से लिखते हैं। निर्मल की भाषा, शैली, कल्पना हृदय मे अकारण उल्लास को जागृत करते हैं। ज्ञान, प्रेम और पवित्रता की अनुभूति करा सकते हैं। कहीं कहीं जीवन को जीवन्त करने वाले तत्व एक ही जगह मिल जाते हैं।

गूढ़ विचार को सरल भाषा मे सुलझाकर पाठक के हृदय मे उतारना उन्हे आता है। महर्षि व्यास के दर्शन और कर्मो को उन्होने सामान्य जन के लिये इतना सरल और सुन्दर बना दिया कि उनके उपन्यास व्यास विष्णु रूपाय की सभी प्रतियें छ महीने मे ही बिक गयी। उनके उपन्यास मेघवाहन, ऋतुराज की भी सभी प्रतियें बिक चुकी है।

जीवन की कड़ी धूप मे खिलते और मुर्झाते जीवन की, और सच्चे प्रेम की निर्मल द्वारा लिखी गयी लगभग चालीस कहानियें नवनीत, सारिका, और सरिता मे, पिछली शताब्दि के अन्तिम पहर मे छपी थी जो पाठकों को आज भी याद हैं। उनके पाठको मे वे कहानीकार के रूप मे ही जाने जाते हैं।

उनके प्रथम उपन्यास बिन उदगम के स्रोत को पढकर जैनेन्द्रजी ने उन्हे हिन्दी के लिये एक विरल वरदान कहा था। निर्मल की विशेषता है रूमानी और भारतीय मानस और संस्कृति के व्यास और शंकराचार्य जैसे निर्माताओ के जीवन और दर्शन पर मौलिक उपन्यास लिखकर आज के जीवन को उनके तप से सुरभित करना। शैली गम्भीर और सत्यनिष्ठ है। उनकी कल्पना सत्य से जन्म लेती है, असत्य से नहीं। इस कारण कल्पना यथार्थ लगती है। आदिशंकराचार्य पर 2006 मे छपा उनका उपन्यास ऋतुराज युवावर्ग की वेबसाईट गुडरीड्स पर लगाातार दस वर्षो से पांचसितारे पाकर प्रतिष्ठित है।